कवि श्री जोगीदान चडीया कृत
शिव सुमिरन
संपादन: भावेश सोलंकी

शिवजी नुं हालरडुं

रचना: जोगीदान चडीया

पड्या रे पेहलां प्रभात..शिव कहे सपनुं रे आवियुं..
जोई में नानकडी जात..शिव कहे सपनुं रे आवियुं....टेक

खप्पर भुली ने जांणे खोळलीयो खुंदतो,
मुने रमाडतीती मात...सति एवुं सपनुं रे आवियुं..01

कालुं बोली ने हुंतो करतो किलकारीयुं..
वालुडी करतो तो वात..शिव कहे सपनुं रे आवियुं..02

साथे हालुं रे मानो पकडी ने साडलो..
भरी ने मुठीयुं मां भात..शिव कहे सपनुं रे आवियुं..03

हाला मे सांभळ्या ज्यां हैडा ना हेत ना..
रोक्या ना आंहुं रोकात..शिव कहे सपनुं रे आवियुं..04

जोगी रे दान न्होती जननी ने जोई में..
मुंने देखाडी तमे मात..शिव कहे सपनुं रे आवियुं..05

भवान शंकरम भजां

रचना: जोगीदान चडीया

छंद: नाराच

नमामी नीलकंठ सर्व आत्मनं सती पती
जटा विराट जग्तपाल जोग सिद्ध हे जती
कमंडलम धरंत हस्त भस्म अंग भोळीया
त्रिलोचना तपस्वीने त्रिशुल्ल हत्थ तोळीया
अनंत तुं नियंत अंत भूत वर्त भावीयां
जटी भीमाय जोगीदान सर्व ईष्ट सावीयां
महा बिजाय काल तुं कराल सर्व कारणा
भवान शंकरम भजा सति सुताय सारणा..01

थिराय तुं वराय तुंज शाश्वता शिखंडणी
महायशो महात्मने महारुपा महत्त मणी
पिनांक हस्त हे प्रवर अजेय आशुतोष तुं
दयालु हंत दक्षरा क्रिपाल सर्व कोष तुं
उदद्धी मंथने कटूय कंठ धार कात्मने
हराय हिर्णअक्ष सांभ्र सर्व भूत स्हात्मने
चतुष्पथाय चर्मिणे विमोचनाय वारणा
भवान शंकरम भजा सति सुताय सारणा..02

निलाद्र मंत्र ॐ नाथ आयुधेन उध्वते
अतन्द्रियाय विंभवे बलद्धनेय बुद्ध्वते
उमापतेय विश्व रुप ग्रहपति सरव गुंणां
निपातिते रौद्र हैमजा वरम पुरक स्फ्रुंणा
सदा शुभं कराय खेचराय शिव सूर्य तुं
प्रणव अजेय पाप नाश प्रांण भक्ति पुर्य तुं
त्रिकाल दर्श त्रयगुंणांम तमगुंण सुं तारणा
भवान शंकरम भजा सति सुताय सारणा..03

गवांमपतेय वज्र हस्त नंदिनम निहंत्रया
महाविनाश मृत्यु देव वेग मन विहंत्रया
महाज्वलाय धुम्र सेवी भंग अंग भस्मरा
रुपाय ब्रह्म विष्णवे चराचराय चस्मरा
विचार विद् विसय परा विमोचना विशेश्वरा
विशारदाय नृत्यनाथ नृत्तकरा निधेश्वरा
महा क्रणा महान्तकाय मौह काम मारणा
भवान शंकरम भजा सति सुताय सारणा..04

सुखास्तकाय सत्तस्वरुप सिंघ आसनंशिवा
नमंत नित्य दर्श हुं दिनंकरा नभंम दिवा
युगाधीयम उपाधियम भुतांधीशं भयंकरा
सबंध मे प्रबंध छंद छंद वर्ण शंकरा
युगक्करा सरवभुता शुभाक्षयाय सिद्ध तुं
अभेद आसुरा सुरा दयाल लंक दिद्ध तुं
जटाधराय जोगीदान जुग्त पाप जारणा
भवान शंकरम भजा सति सुताय सारणा..05

भवानी नी विदाय वखते जगदंबा पार्वती ना पिता हिमालये करेल शिव ने प्रार्थना...

पितानी प्रार्थना

रचना: जोगीदान चडीया

त्रिशुळ धर नाथ त्रिपुरारी,अरज आ ध्यान मां धरजो
हिमालय हाथ जोडुं छुं, दया धर छो दया करज्यो...टेक.

उछेरी छे अमे एने तो हरख थी आ हथेळी मां..
भवां थी भुल थाये तो, कृपाळु दर गुजर करज्यो..01

रडे चोधार आंसुडे अरे रे मौन थई मेना...
भरे मां माटलुं मां नु,तमो जग भाव थी भरज्यो.02

तमेतो नाथ छो मारा तमोने शुं वधारे कउं..
किधी ना आंख थी अळगी,कदी ना आप पण करज्यो. 03

नथी भाई के भोजाई नथी कोई संग साहेली
गभुडी गाय छे गौरी वर्या छो ऐ रीते वरज्यो..04

जो मानो आप जोगी तो विशंभर एटली विनती
रही कैलास पर स्वामी सुखे थी नाथ संचरज्यो.05

सहज भावे हस्या शंकर,प्रणवधर प्रेमथी बोल्या
उमा तो अंग छे मारुं, तमो मा बाप थई तरज्यो. 06

थवुं हो पार भौसागर, लइ आ स्वास नी गागर
तो
जोगी दान आ गाई ,धरमधर ध्यान मां धरज्यो. 07

शिव अवतार वंदना

रचना:जोगीदान चडीया

दक्ष यग्न रग दोळवा, तांडव रचियो तद्र
जटा लट्ट से जोगडा, भयो नाथ विर भद्र 01

हे भगवान महादेव आपे दक्ष ना यग्न मा सती ना दहन थी क्रोध करी ने जटा नी एक लट तोडी विरभद्र अवतार धर्यो अने तांडव रची दक्ष नुं मस्तक छेदी नाख्युं तथा बधा देवो नी विनवणी थी तेने बकरा नुं मस्तक आप्युं आपना विरभद्र अवतार ने मारा वंदन छे.

शनी पछाड्यो शंकरा, आभलीये थी आप
जग्ग तणां सौ जोगडा, बाळ उगार्या बाप 02

हे भगवान शंकर दधिचि ना पुत्र तरीके आपे पिपलाद अवतार धर्यो अने दधिचि आप ने मुकी ने निकळी गया..पिपळा ना पान सेवी ने आप मोटा तपस्वि थया ने पुछ्युं के मने केम बाळपण मांज पिताये छोडी दिधो अने जांणवा मळ्युं के शनि नी द्रस्टी ने कारणे ने त्यां आपे तेने ग्रह मंडळ थी हेठो फेंक्यो तप ना बळे..पण बधानी बहु विनती ते कोयदी जन्म थी सोळ वरस सुधी ना बाळक ने नही हनेडे ते सरते छोडी जगत ना बाळको नुं कल्यांण कर्युं आपना पिप्पलाद अवतार ने मारां वंदन छे..

तपस्या जद ब्रह्मा तप्या,प्रगट्या सुंणी पुकार
जडधर धरियो जोगडा, अर्ध नार अवतार 03

हे भगवान भोळीया ज्यारे ब्रह्माजी ये सृस्टी ने आगळ वधारवा आपनी अत्यंत तपस्या करी त्यारे तेमना तप ना फळ नी मागणी रुपे आपे सृस्टी मां नारी रुप ने प्रकटाववा तेमज नारी शक्ति नुं महत्व जगत ने समजाववा अर्धनारीश्वर अवतार लई तेमांथी शक्ति तत्व ने सृस्टी पर नारी रुप आप्यु आपना आ अर्धनारीश्वर अवतार ने मारा वंदन छे

अयोनीज प्रगटेल ईश, शिलाडीन तप साथ
जरा मृत्यु जीत जोगडा, नंदीश्वर भये नाथ 04

हे भगवान निलकंठ ज्यारे शिलाडीन ऋषी जेवा ब्रह्मचारी ने पोतानो वंश चलाववा अयोनीज पुत्र माटे आपनी तपस्या करी अने तेने खेतर खेडतां आप स्वयंभूः रुपे भुमी मांथी पुत्र रुप

प्रकट्या अने आनंद नो पार न रेहतां आप नुं नामाकरण नंदी करायुं..आम शिलाडीन ऋषी नुं नाम अमर करवा लीधेल आपना जरा अने मृत्यु ने जीतेल नंदिश्वर अवतार ने मारा वंदन छे.

भरमा विष्णु भ्रांत को, जरा न पावत जीत
जग सरजक भय जोगडा, भैरव से भयभीत 05

हे भगवान महाकाळ ज्यारे ब्रह्मा अने विष्णु पण हुं मोटो ई भ्रांती नी भ्रमणा मां भरमाया त्यारे आपे क्रोधित थई भैरव अवतार धरी बंन्ने ने पोतानी स्थिति नुं भांन कराव्युं अने आंगळी ना नख थी बडबडी रहेल ब्रह्मा ना मस्तक ने छेदी नाखेल..आपना ए काशीपति काळ भैरव अवतार ने मारां वंदन छे.

होय शस्त्र नव हाथ हण, क्रोध उपर रख काप
जन्म शिखावत जोगडा, अस्वस्त थामां आप 06

हे भगवान चंद्रमौली आपे अस्वस्थामा अवतार थी जगत ने जणांव्युं के हाथ मां हथीयार होय तो पण तेनो उपयोग निर्दोष ने हणवा माटे न करवो तथा क्रोध पर काबु राखवो अने अस्वस्थ न थवा नी शिख देता आपना अजर अमर अस्वस्थामा अवतार ने पण मारां वंदन छे.

नाथ झपट नरसिंघ पर, पुंछ लपट कीय पार
जुक्या देव पद जोगडा,असो शरभ अवतार 07

हे भगवान त्रिपुरारी ज्यारे हरण्यकस्यप ने मारी भगवान नरसिंह नो क्रोध शांत नोहतो थतो त्यारे आपे अडधुं मृग नुं शरिर ने अडधुं सरभ पक्षी नुं आंम.शरभ अवतार थी नरसिंह ने पुंछडी मां लपेटी ने आकास मां उपाड्यो त्यां तेऩी छाती मां चांच मारी शांत नई पण नरसिंह ने भयभीत करी नाख्यो अने जगत ने क्रोध थी उगरवा सिख आपी तेवा आपना शरभ अवतार ने मारां वंदन छे.

भग्त पाप सब भंजवा, कर्यो रुप कपीयान
जाळक लंका जोगडा, हर प्रकट्यो हनुमान 08

हे भगवान पिनांकपांणी आपे पोताना अनन्य भग्त रावण नां पाप बाळी देवा माटे लंका बाळवा कपीवर एवा हनुमान नो अवतार लीधो जेऩी कथा जग विदित छे एवा आपना हनुमान अवतार ने मारां वंदन छे.

अनहद तपस्या से अयो, गुर्जर घर गुंणवान
जठराग्नि रुप जोगडा, गृहपति शंकर गान 09

हे भगवान करुणाकर सुचिस्मति अने विश्वनार ऋषी नी तपस्या थी प्रसन्न थई आपे तेमने त्यां गृहपति नामे अवतार धारण कर्यो जे जठराग्नी नुं बिजु रुप कही सकाय तेवो हतो ते गृहपति अवतार ने पण मारां वंदन छे.

कियो क्रोध हर कामपर, रुद्र चुक्यो निज राह
जडधर जनम्यो जोगडा, दुरवाशा रुप दाह 10

हे भगवान अजन्मा शिव आप अत्री ने आश्रम जई पोतानी राह चुकी ने जमवा नुं पिरसणुं माग्युं तथा सती ना तपोबळे आप बाळक बन्या तथा माता अनसुया ने खोरडे दुर्वासा अवतार धर्यो अने क्रोध थी केवो विनास थाय छे तथा पोतानीज तपस्या ओछी थती जाय छे तेवि सिख जगत ने आपी ते आपना दुर्वासा अवतार ने मारां दंडवत प्रणांम सह वंदन छे.

वृषभ बणी विष्णुतणो, विध्वस करीयो वंश
जई पाताळे जोगडा, अवतारी शीव अंश 11

हे भगवान कालातीत आपे विष्णु पुत्रो के जे पाताळ थी पृथ्वी सुधी विनास वेरी रह्या हता ते तमाम विष्णु ना वंश नो विध्वंस करवा वृषभ अवतार लई धर्म नुं रक्षण कर्युं छे आपना वृषभ अवतार ने मारां वंदन छे.

भलो रख्यो ध्रम भीलडे, सद आतिथ सत्कार
जुक्यो शीव चीत जोगडा, यती नाथ अवतार 12

हे भगवान व्याघांम्बर ज्यारे आप आहुक भील ना त्यां रातवासा माटे यतिनाथ अवतार मां गयेल त्यारे आप ना आतिथ्य ना रक्षण हेतु ते भीले पोतानो धर्म बजावी जीव दिधेल..आपे आ रिते समाज ने आतिथी देवो भवः नुं सिक्षण आप्युं छे..आपना यतिनाथ अवतार ने मारां वंदन छे.

गण गोकळ समजे गणां, सत्य करे नही सोध
जगन नभग पर जोगडा, कृष्ण द्रशन किय क्रोध 13

हे भगवान उमानाथ लोको तो आपना कृष्ण दर्शन अवतार ने एवुं समजे छे के तमे कृष्ण ने जोवा गोकुळ आव्या ते रुप.. पण सत्य तो ऐ छे के आप ज्यारे नभग ना यग्न वखते त्यां ऋषी कृष्ण(काळो वर्ण)दर्शन(देखावुं) एटले काळ पुरुष अवतार मां आवेल अने ते यग्न धन संपत थी क्षुधार्थु नुं जे कल्यांण करेल आपना ते कृष्ण दर्शन अवतार ने मारां वंदन छे.

नवे खंड जाको नमे, भजे प्रेत अरु भूत
जुक्यो सचीपत जोगडा, अवतारी अवधूत 14

हे भगवान पशुपति नवेखंड धरती आपने नमे छे भुत प्रेत आदी आपने भजे छे तथा आपना अवधुत अवतार ने ओळख्या सिवाय ईन्द्रये वज्र नो घा करवा हाथ उंचो कर्यो अने त्यां ने त्यां थीर थयो पछी आप नी स्तुतीयो करी ने मांड छुट्यो, आपे जे एने शक्ति नुं अभिमान न करवा सिखव्युं ते आपना अवधुत अवतार ने मारां वंदन छे.

सतरथ ना संतान कज, प्रकट विदभ पहचान
जीव जीवाड्यो जोगडा, भिक्षुक थई भगवान 15

हे भगवान अनाथो नाथ तमे विदर्भ देस ना राजा सत्यरथ ना पराजय पछी तेनी भटकती राजराणी पोताना पुत्र ने पांणी पिवडाववा सरोवर पासे गई अने मगर नो सिकार बनी त्यारे एक भिक्षुक तरिके त्यां आवेल अने ते बाळक ने बचावी ते मोटो थया पछी तेनी सहाय करी तेने पाछो जीताड्यो आम आप अनाथ ना पण नाथ होवानुं जगत ने जणांव्युं तेवा आपना भिक्षुक अवतार ने मारां वंदन छे.

भ्रम भेटण कज भग्तनो, जब अकळायो जीव
जंगल प्रकट्यो जोगडा, सुरेश्वरा रुप शीव 16

हे भगवान महेश्वर ज्यारे व्याघ्रपद नो पुत्र उपमन्यु आपनी जंगल मां उपासना करतो हतो त्यारे आपे सुरेश्वर रुपे शीव ने न केहवाना शब्दो कहेल..तेनाथी क्रोधीत थयेल उपमन्यु आपनी सामे थयो त्यारे आपे पोते शंकरावतार होवानुं कही दर्शन आपेल अने तेने क्षीर सागर जेवा अनश्वर सागर नुं आधीपत्य आप्युं जे दुध नो समुद्र होवानुं पुराणो कहे छे..तेवा आपना सुरेश्वर अवतार ने मारां वंदन छे.

दियां शस्त्र अरजून द्रढ,परख करी पशुपात
जय आशिस दिय जोगडा, कौरव ध्वंस किरात 17

हे भगवान भालचंद्र आपे अर्जुन ने कौरव विरुद्ध लडवा अस्त्र् सस्त्र प्रदान कर्यां ते पेहला तेनी सामे किरात ना रुपे पधारी तेनी साथे युद्ध कर्युं अने जगत ने समजाव्युं के देवाता दान माटे पात्र योग्य छे के नही तेनी परख करी ने आपवु आम अनहद सिक्षा ना गुरु तेवा आपना किरात अवतार ने मारां वंदन छे.

तोड सके ना तणखलुं, दैव बन्या हिंण दैव
जदे यक्ष बण जोगडा, मद त्रौडत महादैव 18

हे भगवान महादेव ज्यारे आपे विस पिधु अने देवो बधा अमरत पिधा ना मदमां आव्या त्यारे यक्ष ना रुपे आप आवी तणखलु तोडवा सौने कह्युं पण कोयथी एक तणखलुंय तुट्युं नई..अंते आकासवांणी थई अने आप महादेव होवानुं सौने जांणमा आवता बधा करबंधी आपनी प्रार्थना करवा लाग्या आम हे मद तोडनार महादेव आपना यक्ष अवतार ने मारां वंदन छे.

शंभु गिरिश भव थांणु शिव, सदा शिव हर सर्व
जपत कपालीय जोगडा, गंज पिनाकीन गर्व 19

हे भगवान गंगाधर जेनी जटामां थी निकळतुं जळ जो पाप मुक्त करी देतुं होय तो आपना अवतारो नो उल्लेख करनार ना तो भवोभव नां पाप प्रजळी जाय
हे भगवान रुद्र आपना तमाम अवतारो मां दस रुद्र अवतार तरीके.. 1.शंभु, 2.गिरिश, 3.भव, 4.स्थांणुं, 5.शिव, 6.सदाशिव, 7.हर, 8.सर्व, 9.कपाली अने 10 पिनाकी एम पण पुरांणो मां वर्णवाया छे...आपना तमाम रुद्र अवतारो ने मारां वंदन छे.

हर रस

रसणा: जोगीदान चडीया

शिवानुस्टप

गौरि सुत शंकर गणांम् , वक्रतुंडम् विनायका
शब्दारुढ चडिया शुभम् , शारद मात सहायकम

प्रणमुं नित परमेश्वराम, ईशराम नाद आर्तनां.
जोगडा जडधरा जिहवां, सिर चडिया शंकर स्रनम

निलकंठम उदतम नितम् , सुर्य रुपाय शंकरां
भास्करां भोळीया नाथौ, नित चडीयो करीतं नमन

सुत सतीयं वंशी सुतम्, अच्युत नाथ अनादिनां
स्रण चडिया गण सारणां, विश्व कल्यांण कर व्रदम

विश्व रुपां धरम्म वर्धा, प्रांण रुपम प्रवर्तिता
सर्व व्रद सारणम सेवा,जिह्व चडीयाय जडधरा

दोहा

रसण नंद रामेश रट, गाई रह्यो शिव गान
जडे रुपक नव जोगडा, शिव बस शिव समान

द्रद मेटण महादेव तुं, हर सांभळ हर साद
जडधर हो भुल जोगडा,वडा न धरसी वाद

विस चहुंतर वंदना, गण शंकर शुभः गान
जद पायो घट जोगडा, शिव रस प्रांण समान

पाठत हरिरस प्रेमसह, हर रस लाध्यो हाथ
जडधर वंदण जोगडा, भर्यां शब्द मुख भाथ

सुध बुद्धि सूत सारणे, कही कथा शिव काज
जापत शंकर जोगडा, अंतर औहम अवाज

प्रभु तर्क से है परे, आवत नइ अनु मान
जग्त शिवोमय जोगडा, जाग्रत नर ले जान

भुजंग प्रयात

कह्यो सौनके सूत्त चारन्न साधो, बुधी सुद्ध होवे असो ग्यान बाधो
गती देवणी शिव की शुभ्भ गानी, बखांनो सुधा रुप ये दैव बानी

महिम्मा महादेव को खुब मोटो, जडे जोगडा ना जिको जग्ग जोटो
पुरांणो महीं देव पुरन्न पायो, सहिंताय सातो महीं शिव छायो

छुटी कर जटायुं जदे वीर छोड्यो, तदें वीरभद्रे गरव दक्ष त्रोड्यो
भली भावनाथी रह्युं दूर भोरू, सती रक्षवा जेह भेजेल छोरु,

धणीं सत्य ने धर्म कैलास धामी, क्षमा चारणो मांगीये भूत स्वामी.
नमह शंकरायम शिवायम शिवायम.

वटे वंश गोहिल्ल धायल्ल वारे, भई फौज भिल्लां मुसल्लां न भारे
कटे शिस जुजे भयी टुक्क कायम, नमः शंकरायम शिवायम शिवायम

भजे हम भवानीय भोळा भ्रथारंम,प्रभुं ब्राजीये जोगीदानम् प्रथारम
सबै काज मैं हो शिवा शिव स्हायम्,नमः शंकरायम शिवायम शिवायम

||शिव सरणम् ||

रचना: जोगीदान चडीया

छंद: भूजंग प्रयात

नमो भूत नाथम् भभूतम् भूजंगी, नमो चंद्र वाहन अरी चर्म अंगी
नमो विश्व नाथाय नागेन्द्र नामी, शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||01||

नमो भस्म अंगी जटा बंध गंगा,नमो निल कंठम सदा भूत संगा
नमो हस्त पिन्नांक दैतांण डामी, शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||02||

नमो सर्प कंठा सुरेशम् महेशम्, नमो मुंड मालाय वैदर्भ वेशम्
नमो कामदम् ध्यावतम् योग धामी,शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||03||

नमो नृत्य नायक अजन्माय योगी, नमो जग्त हन्ता जपे दान जोगी,
नमो सुर्य चक्षा कीनो भस्म कामी, शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||04||

नमौ हिंगळा ब्रह्म रंध्राय बासी, नमो काळ काळेश हे नाथ कासी
नमो स्कंध ताता गणेसानुं गामी, शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||05||

नमो सोम ईसम् भीमा वैध नाथम्, नमो मल्लीकार्जुन श्री शैल साथम्
नमौ त्रंबकेदार भोळा भजामी, शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||06||

नमो राम रामेश गौरेश गाथा,नमौ हर प्रिया सोहणां वाम हाथा
नमो नाथ नारेशरा कैक नामी, शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||07||

नमो औम कारम् धरूं नित्य ध्यानम्, नमौ मोक्ष कारम् जपुं जोगी दानम्
नमो पाप हन्ता प्रणामी प्रणामी, शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||08||,

केदार नाथ

ढाळ: पग मने धोवा दो रघुराय

रचना: जोगीदान चडीया

दोहो

खोळे शिव ने खेलवे, लडवे मीठांय लाड

जडधर हारे जोगडा, पुज्या जोग पहाड

भजन

केवोय नाथ केदार... जांणे ईतो आतम नो रे उधार...केवो आजे देखाणो केदार...टेक

गौरी कुंडथी गाजीयो मारा अंतर मां ओमकार जी(02)

अगस्त मूनीये उतर्यां बधा पवन हंस प्रसार..केवो मने देखांणो केदार...01

जे सरोवर धरम राजा सरग ग्या ता सिधार (02)

एनां दरशन करी थ्युं मन पावन पारावार..केवो मारो वालो नाथ केदार...02

शंकराचारे समाधी लई आप्यो जे अणसार..(02)

विशंभर ज्याॅ वृंदा थई ती तारामां एकतार..केवो बड भागी बाप केदार...03

जेना माथे जोगीदान के भोमीय केरो भार (02)

त्रिलोचन ई तारा कंठे शेष नो सणगार ..केवो तने क्हेवो नाथ केदार ..04

ॐ नमः शिवाय

(हजारो वर्ष तपस्या करनार वृंदा पिता केदारे स्थापेल शिव नो हजारो वंदन..जे पहाडो ना खोळा मां ते केदार नाथ नुं मंदिर छे मारे मन तो ए पहाडोय पुजनीय...

गौरी कुंड थी ज्यां ॐ नमः शिवाय ना नाद संभळाता होय..ने ज्यां अगस्तमुनीये पवनहंस ना विमानो पांखो पसारी फरता होय..ज्याना सरोवर मां धर्मराज युधिस्ठीरे पोतानी देह्युं पडती मेली ने सिधा स्वरग मां ग्या होय.. ज्यां चारेय धाम ना धुंणा जगवनार शंकराचार्य पोते शिवसरण मेळवी पोता नी समाधी त्यां करावी अणसार आपी गया होय...तथा आखी भोमका जेना माथे छे एवो शेष जेना गळा मां पड्यो होय ए शंकर ने आपडे शुं आळेखी सकीये ??बस तेने लळी लळी ने लाखो वंदन..जय केदार नाथ)

|| शिव सारसी ||

रचना : जोगीदान चडीया

कैलास पर माळा कपोली फेर बेठत फंकडो
डम डडम डमरु नाद डमके बोल बंम बंम बंकडो
परजा पती ने जपट पींख्यो धाह सुंणतां धावशे
जपीयें अलख जप जोगडा तो आज शंकर आवशे.. ||01||

परजा चुकी छे पुन्य मारग मोह मां मंडाई छे
उजवळ हती जे आर्य नी ए रीत पण रंडाई छे
धखता तीखारा धरमना लई गीत चारण गावसे
जपीयें अलख जप जोगडा तो आज शंकर आवशे.. ||02||

उपनीसदो वेदो पुरांणो अमर साहीत आपणुं
पस्चिम नी ज्वाळा प्रजळतां तेह नुं थ्युं तापणुं
कर सुद्ध नरसी समो कोई लगीर बस लंबावसे
जपीयें अलख जप जोगडा तो आज शंकर आवशे.. ||03||

अंतरां नादे असुर आवी गांण तांडव गावतो
वर दसक माथा वाढ नारो पाप चारी पावतो
मेली जटा ने मोकळी ऐ खलक दाढे खावशे
जपीयें अलख जप जोगडा तो आजशंकर आवशे.. ||04||

दरसे दीगंबर चर्म चंबर अलख अंबर अंचरे
कठेय काळा वीस वाळा सीस माळा सांचरे
भावे भरेला शबद भुज बळ भोळीया ने भावसे
जपीयें अलख जप जोगडा तो आज शंकर आवशे.. ||05||

||नाथ भयंकर नाट नचे||

छंद: दुर्मीला नी चाल

रचना: जोगीदान चडीया

कडेडाट नभे जेम थाय कडाकाय फेर फडाकाय जाय फरे.
कईलास परे महावीर घटोघट्ट धीर धुरज्जट ध्यान धरे
ध्रिजबांग ध्रिजांग ध्रिजांग नो ढोलड बुंगीये तालड केम बचे.
नटराजन रूप धरी शिव शंकर नाथ भयंकर नाट नचे.01

चडीया चकचूर खुली लट खेंचीय मेंचीय आंख ने खेल मच्यो
विर भद्दर रूप बण्यो विह वेहर केहर ज्यों डंणकाट डच्यो.
विजळी सम कुंडळ आंख भ्रेकुंडळ मुंडळ माळाय कंठ मचे
नटराजन रूप धरी शिव शंकर नाथ भयंकर नाट नचे.02

धरणी धमके चमके दीस चारोय आरोय एकेय नांय अबे
जप जापत कांपत देख प्रजापत दापत भंजण भोंय दबे
अरधांगण कंध धरी अधयंकर डुंगर कंकर जेम डचे
नटराजन रूप धरी शिव शंकर नाथ भयंकर नाट नचे.03

घूघवे घनघोर बणी सिर घोरत डोरत सिंघ समा डंणकी
तरहूर हथे तणेंणाट करे खंणणाट करी खपरां खंणकी
डमरुंह डडाक डडाक डची डिम डाक सबै जग हाक मचे
नटराजन रूप धरी शिव शंकर नाथ भयंकर नाट नचे.04

जड़धार जगत्द अधार पमे कुंण पार उतार पुकार सुंणे.
नमीया नव नाथ नमौ नव खांडव पांडव तांडव नाम पुंणे
जसगान रची जोगीदान भलो चडियो गण चारण नाम च्रचे.
नटराजन रूप धरी शिव शंकर नाथ भयंकर नाट नचे.05

शिव कळश छप्पय

भयो रुद्र भेंयकार, वार दक्षां पर वरीयो
सती नाथ सिंहकार, खार परजापत खरियो
ओहम कार उच्चार, कार विर भद्दर करीयो
हकबक हाहाकार, धार धूरजटी रुप धरीयो
सती पती सगती व्रती, जती क्रती जग जान है.
मति गति म्हादेव महामन,जडधर जोगीदान है

|| **शिव वंदना अष्टक** ||

रचना: जोगीदान चडीया

छंद: त्रीभंगी

करतुंड कटंकर. खाग खटंकर. मुंड मटंकर. भयभीन्ना.
मंथन दधी मंकर. भुजबल भंकर. गरल गटंकर. गणकीन्ना.
निलकंठ नटंकर. लचक लटंकर. जटा जटंकर जणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||01||,

जोगण पत जंकर. बात बधंकर. दक्ष दधंकर. हथलीन्ना.
गीयणां गणणंकर. चकर चटंकर. प्रथी पटंकर. रतपीन्ना.
दावानल दंकर. फाट फटंकर. खडग खटंकर. खणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||02||

चडीया चिह चंकर. सारण शंकर. भजो भजंकर. भयहरणा.
जोगीह जपंकर. दान दपंकर. तेज तपंकर. तमतरणा.
अरपे अभयंकर. रुद्र रयंकर. झांझ झणंकर झणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||03||

प्रथमी पड पड़कत.धणणण धडकत. डुंगर दड़कत. दडडदडे
फंण शेषही फड़कत. कछपीठ कडकत. खडगांखडकत. खडडखडे.
भवनेहर भडकत. थड़धर थड़कत. तडडड तड़कत. तणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||04|| .

हरहर कर हणणण. त्रिहुळां तणणण. भुमड भणणण. भणणभमे.
गावत गण गणणण. छावत छणणण. ध्यावत धणणण. धणणधमे.
चख कुंडळ चणणण. भैंचक भणणण. बौलत बणणण. बणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||05||

झपटी धर झुक्का. सबलीत सुक्का. हरभर हुक्का. हडडहमे.
चरअचरण चुक्का. नवखड नुक्का. भुतल भुक्का. भडडभमे.
तांडव व्रत तुक्का.दानव दुक्का. भणण भभुक्का. भणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||06||

हरिवर हररायो. धरपर धायो. तमकर तायो. तरजणींयां.
नव सोच समायो. शिव शव छायो. सती सुधायो. सरजणींयां.
बावन टुक बायो. शिवा सिदायो. सुदसन सायो. सणणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||07||

त्रय लोचन तडीया. आग उघडीया. धोम धखडीया. तणघडीया
चारण गण चडीया. जोगीह जडीया. दान हीदडीया दडवडीया.
कर दुर दखडीया. सौप सखडीयां. हिये हखडीया. हणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||08||

जडधर शंकर जाग

रचना: जोगीदान चडीया

माता रांदल आवो ने... ने मळतो

श्रावण दरशन शंकरा, नाथ दियो गळ नाग
जगवे भगतां जोगडा, जडधर शंकर जाग

गीत

भोळा शंभू.. जगाडे माता पारवती,
तमे जागो जती ना जती रे...
जगाडे माता पारवती....टेक...

महा लक्ष्मी ने शारदा आवी मळ्या
ब्रह्मा विष्णु नी संगे ते सूर भळ्या
गाजे चारण गान मां अकळ गती...
भोळा शंभू.. जगाडे माता पारवती, ..01

निर.. मोही निरं तर नाथ नमूं..
आशुतोष ए शेवीये आश अमुं..
दरशन श्रावण मास ना शिव सती...
भोळा शंभू.. जगाडे माता पारवती, ..02

झोळी कमंडळ माळा युं हाथ झुले
खोलो आंख त्यां भग्तो नां भाग्य खुले
वंदु नाथ विसं भर विश्व वती...
भोळा शंभू.. जगाडे माता पारवती, ..03

गौरी नाथ उमा पती खूब गमे
जोगीदान ने ध्यान मां एज रमे
महा देव छे तुं हुं तो मंद मती...
भोळा शंभू.. जगाडे माता पारवती, ..04

|| गोपीनाथ नी गरबी || .....

ज्यारे गोकुळ नो रास जोवा हेमजा पार्वती निकळ्या अने शिवे पण साथे जवा जीद करी माताजीये शिव ने कह्युं के त्यां मात्र कृष्ण नर अने बाकी बधी नारीयो होय...तो भोळोनाथ रास नो ल्हाव लेवा नापी रुप धरी रमवा पधारेल...तेनुं आछुं वर्णन करती आ गरबी...

|| गोपीनाथ नी गरबी ||

रचना : जोगीदान चडीया

रमे छे कान रंग ताळी गोकुळीया मां..रमे छे कान रंग ताळी..
भोळा गोवाळीयाने भाळी.. गोकुळीया मां.. रमे छे कान रंग ताळी..टेक

हरखे ते रमवा ने हेमजा रे हाल्यां, म्हादेव मन मां मीठडुं रे माल्या..
हेते थीयाछे ईतो हाळी.. गोकुळीया मां..रमे छे कान रंग ताळी...

थोडुं हसी माता पारवती थोभ्या, लेवाने रास आज शिवजी रे लोभ्या
सज्या सणगार ओढी साळी.. गोकुळीया मां..रमे छे कान रंग ताळी...

अलख जटा नो एणे वाळ्यो अंबोडो, नाग उतारी पेर्यो केडे कंदोरो
गंगा ने मुक्यां हेम गाळी... गोकुळीया मां..रमे छे कान रंग ताळी.

जोगी नो रास जोगीदान एवो जाम्यो..पितांबर धारी एनो भेद बधो पाम्यो.
भभुती उडती ज्यां भाळी रे.. गोकुळीया मां..रमे छे कान रंग ताळी.

वाली वांसळीयुंने जाय ईतो वारी...नाथ कैलास नो ज्यां बनीया छे नारी
हस्या आ देव सौ निहाळी रे ...गोकुळीया मां..रमे छे कान रंग ताळी...

||रसभर कानड रास रचे ||

छंद : रास रेंणंकी

रचना: जोगीदान चडीया

गोकळ तळ अतळ हुकळ जमुनाजळ भरण हेल हथ ठाल भमे
सणणण सुर सकळ बकळ बन बंसूर वंसूर गौधन वाल गमे
गौपण पग घणण झणण रव झांन्झर मदभर मोहन ताल मचे
ध्रुजवण पड़ धरण ठरण पद ठाकर रस भर कानड़ रास रचे. ||01||

रमणां सह रास आस अविनासन पंथ कंथ कई लास पर्यो
तजीयो नर रुप चुप बण चलीयत कलीयत कामण रुप कर्यो
खणणण रव पाव खलक पत खणणण जणणण जोगड दान जचे
ध्रुजवण पड़ धरण ठरण पद ठाकर रस भर कानड़ रास रचे. ||02||

दैतां दळ दलन खलन हनुवा पीत ललन मोह हर लाव लीयो
सजीयत सणगार नार सम नाथन गरत गौरी सह गान गीयो
सरकत सीर साल ताल पद तौडत लचक मचक शिव अचक लचे
ध्रुजवण पड़ धरण ठरण पद ठाकर रस भर कानड़ रास रचे. ||03||

चहु दीश ईश चकर पकर चीर पल्लव नटवर हर पर हाथ धर्यो
डीम डाक हाक धर चाक फरत लग सरम मरम गुप नाथ सर्यो
याचत नीज लाज काज कह कानड बकत चकत अब कवण बचे
ध्रुजवण पड़ धरण ठरण पद ठाकर रस भर कानड़ रास रचे. ||04||

बाप ने बाळक नो ठबको

कंठ निला सिदने कर्या, बिजां लगनीयां बाप
मा देव पद नुं माप, जाळ्युं नई कां जोगडा

हे पिता शिव आज पुजा मां ते रडाव्यो छे..अमारी मां सती नो तुं देव (मा देव) कही ने अमे नित पुजीयें तने पण सती ना मर्या पछी तें बिजा लगन सिद कर्या??

परवते पे लई परवती, बाप भले हो बेठ
हर तुं उतर्यो हेठ, जो आ क्रम थी जोगडा

हे शिव तुं अमारो बाप छे अने सती अमारी मां...मारुं मन पार्वती पुजन मां क्यारेय नथी लाग्युं कारण ए अमारी ओरमान मा छे..तुं भले पर्वत नी टोचे जई ने बेठो पण आ कर्म थी तुं थोडो हेठो आव्यो...

तारेय कारण त्याजीयो, जेंणे पोतानो जीव
एने
शिद भुली ने शीव, तुं, जाय परणवा जोगडा

हे बाप तारुं अपमान जोई पोताना बाप नी विरुद्ध जई जेंणे पोतानो जीव दईदिधो ई सती ना मरण बाद रंगे संगे परणवा जता तने लाज न आवी???

पारवती पत पोगीयो,ठबको तुं लग ठेठ
वाळ्य मां आवी वेठ, जडधर वंदुं जोगडो

हे पारवती ना पति आ ठबको तो तारा लगी पोग्यो छे..माटे हवे आवी वेठ मं वाळ्य नाथ.. सरम नो मार्यो सामो नई आवतो होय ई खबर छे पण तुं सांभळी रह्यो छे एय अनुभुती थई रही छे एनो पुरावो पुजा समय ना आंसु छे...

मारुं कह्युं नव मानीयुं,कर्यो न काबु क्रोध
सती सगत नी सोध, जाई करुं क्यां जोगडा

महादेव कहे के एने में मनावी तोय मारुं कह्युं मानी नई.. अने पिताने त्यां मारा अपमान ना कारणे उपजेल क्रोध ने ए काबु न करी सकी...एंणे जो पोतानो जीव न दिधो होत तो एनो क्रोध विश्व ने ध्वंस करी नाखत तेवी हे सती हुं तारी क्यां सोध करु?

रेहतुं नोहतुं रुद्रके,ध्यान तणुं पण ध्यान
गई सती अने ग्यान, जांणे लई गई जोगडा

सती ना गया पछी शिव कहे मने ध्यान नुं पण ध्यान नोहतुं रहेतुं...जांणे के सघळुं ग्यान ए एनी साथे लई गई होय....

तांडव जेने तुं कहे, सती वियोगी सोक
जगत विनासत जोगडा, रखे न लेवत रोक

तमे लोको जेने तांडव नृत्य कहो छो ए नृत्य नोहतुं एतो मारो सती वियोग नो क्रोध हतो..जो एने रोक्यो न होत तो आ विश्व नो विनास निस्चित हतो....

चुक्युं रखोपुं चारणे,करगरीयो डिल काप
जनमुं तुं घर जोगडा, बटा थजे तुं बाप

चारण गण ने सती ना हारे रखोपे मोकलेल पण ए क्यांक वातुं ना वडा करवा मां रह्यो ने सती ये यग्नमां पडतुं मुक्युं ..चारण करगरी ने कांपता डीले माने विनववा लाग्यो..त्यारे सतीये कह्युं के हुं तारे त्यां आईयु रुपे आवुं छुं...तुं बेटो छे पण हवे बाप थाजे....

|| शिव अष्टपदी ||

रचना : जोगीदान चडीया

छंद : अष्ट पदी नाराच

डिमडिमाक डिमडिमाक डिमडिमाक डम डमा
बजंत डाक शिव का धरा पडांय धम धमा
तणंत घोम तिरहूरा त्वरीत्त वेग लै तमा
उठंत नाद घोर त्राड प्हाड देत पड़ घमा
धगंत लाल लोचनाय तेज सूर टमटमा
अनाधी देव ईश तुं निकुल्ल नाथ निरगमा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||01||,

चडे चबांन चारणांय छंद शी करी छटा
कीया प्रकट्ट काळशाय जड्धरा खुली जटा
धडं धडा धडक धडक धरा धमंक घुर्जटा
कडड थडड फडड फटाक फेण शेष का फटा
किलक्क किलक्क भेरूकाळ बोलतोल बंम्बमा
नटाट रंग नाच शुं सकंभरी करे समा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||02||

धरा पडंत गंग धार धोध शीश पे धर्यो
खुली जटा लटा कटाय भद्र विर सुं भर्यो
फरर फरर फरर फड़ाक फेर फूरदडी फर्यो
हर्यो है दक्ष हाम धाम ठाम ध्वंस के ठर्यो
डडम् डडम् डडम् डडम्ब डाक बोल डमडमा
ततत्त् ताक थाक थैय नाट राज ना थमा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||03||

बबंम्ब बबंम्ब बंम्ब बंम्ब बंम्ब नाद बज्जीया
शिवंम प्रकट्ट संग विर सैन्य प्रेत सज्जीया
हडड हडड हडड हुकंत भूत नाथ भज्जीया
कीये भ्रकुंड नैंण काळ रुप क्रोध कज्जीया
अघोर घोर नाद मे चले फुकंत चिल्लमां
कपोल कांघ शिश कट्ट भूत प्रेत सा भमा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||04||

घुमी उमड घुमड जटा घने घुमंड घोरीयां
गड़ड हड़ड कड़ड कड़ेड फट्ट आभ फोरीयां
सुट्यो सड़ाफ डांफ नंदी हांफ राव होरीया
धमा धमाक देत धींह धाक दक्ष धोरीयां
जली सती अती कलीक् काळ हाड कमकमा
बजंत पाय पयजणां छनन छनन छमा छमा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||05||

दीयंत त्राड प्हाड फाड़ पांण भौम जा पडा
करंत शिव काल कोप जोप धोप जोगडा
दीखंत्त रौद्र रुप दक्ष तांडवम तडम तडा
भगे कहां भवां पिताय जग्ग राह नव जडा
थरर थरर थरर थयल्ल काय ध्रुज कमकमा
मनस्वी पुत्र ब्रह्म मान नाथ पाव मे नमा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||06||

खडड भडड खड्यो खलक्क खंड द्विप खंडीया
जली कहंत जोगडो चिता विहीन्न चंडीया
रुके न रौद्र रुप शीश मुंड काट मंडीया
भ्रकुंडी नाथ भोळीयाये दक्ष राज दंडीया
हरी गये हरर तदे तमस्वी देख कर तमा
चल्यो हे चक्र वक्र हस्त देह टुक्क कर दमा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||07||

विसो खटा खटा विसोय पिंड देह परगमा
सति हती हती नती य झीक नैंण से झमा
हयात हिम जोड्य हाथ शिस झुक्क के क्षमा
सती पति जपे जती अरप्पीयुं सूता उमा
करत्त सेव देव हेव रंज मन्न नई रमा
पवित्त चित्त हीत्त मात पार वत्तीयां पमा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||08||

(अथः श्री शिव किर्तन अष्टपदी नाराच अष्टक संपुर्णम्)

(विसो खटा = 26 + खटा विसो = 26
ऐटले के 26+26= 52 टुक मां सति नो देह थयेल (खट =6))

(भगवान शिव दक्ष नो ध्वंस करवा हेतुज यग्न स्थाने आवेल अने ते पछी हीमालय के महाराजा हिमावन अने मैनावती नी भक्ती वान पुत्री पार्वती साथे लग्न हेतु कैलास पर रोकांण थयुं अने माता पार्वती ना मेळाप थी अतः अष्टक ने अंतिम चरण आपवा नो प्रयास आप सहुने गमशे ऐवी आशा व्यक्त करुं छुं)

ॐ नमः शिवाय

शीव भजन

राग: तोडी

रचना: जोगीदान चडीया

शिव ने ऐज शीवा समजावे, (02)
भेद अगम पद भांख भवानी, दीव्य परा दिखलावे...
शिव ने ऐज शीवा समजावे.....टेक

तत्व रजस तम ने सत सगती, आतम थी उपजावे
आज रमा अविनास अखंडी, बहुधा रुप बतावे
शिव ने ऐज शीवा समजावे.....01

धुन मां ध्यान धरी तुं धुरजट, अलख कही ओळखावे
गणगण ती हुं सात गगन मां, गीत ई वेदो गावे
शिव ने ऐज शीवा समजावे.....02

तुं पद नो ज्यां तार तुटे ने , हूं पद ना हर खावे
आतम त्यां ॐ कार उचारी, परत परम पद पावे
शिव ने ऐज शीवा समजावे.....03

कलम बिराजी कांकण वाळी, चडीया सुं चितरावे
जीव शीव जोगी दान जनम म्रत, सास्वत थी सरखावे
शिव ने ऐज शीवा समजावे.....04